STUDY MATERIAL FOR B.A-III

प्रमुख भारतीय रियासतों के साथ ईस्ट इण्डिया कंपनी के संबंध

बंगाल

प्रश्न : अंग्रेजों ने बंगाल पर किस प्रकार आधिपत्य स्थापित किया? विवेचना कीजिए।

पृष्ठभूमि :

- दक्षिण के साथ-साथ अंग्रेजों ने बंगाल में भी अपने प्रभाव को जमाने का प्रयास किया। भारत के पूर्वी प्रांतों में बंगाल, बिहार और उड़ीसा के प्रदेश सबसे समृद्ध थे। अत: बंगाल पर नियंत्रण स्थापित कर वहां की धन संपत्ति पर नियत्रण स्थापित करना ब्रिटिश साम्राज्यवादी हितों के अनुकुल था। बंगाल में अन्य यूरोपीय शक्तियों की उपस्थिति भी बहुत प्रभावी नहीं थी। साथ ही बंगाल पर मुगल नियंत्रण भी प्राय: ढीला ढाला ही रहा। बंगाल में मराठों के समान चुनौती देने वाली क्षेत्रीय शक्ति उपस्थित नहीं थी। इस प्रकार बंगाल की आर्थिक समृद्धि एवं राजनीतिक अस्थिरता ने अंग्रेजों को बंगाल पर नियंत्रण जमाने के लिए प्रेरित किया।
- बंगाल पर ब्रिटिश नियंत्रण एक दीर्घकालिक प्रक्रिया का परिणाम था। जिसकी शुरूआत 1651 में हुगली में एक ब्रिटिश व्यापारिक कंपनी की स्थापना के रूप में हुई थी और जो 1765 में बंगाल की दीवानी प्राप्त करने के साथ पूर्ण हुई।
- बंगाल में औरंगजेब के समय से ही मुर्शीद कुली खां गवर्नर के रूप में मौजूद था और औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् लगभग स्वतंत्र स्थिति में राज्य कर रहा था। मुगल शासक समय-समय पर अंग्रेजों को बंगाल में व्यापारिक सुविधाएं प्रदान करते थे जिन्हें बंगाल के गवर्नर मान्यता देते थे। इस क्रम में फर्रूखशियर द्वारा अंग्रेजों को दिया गया शाही फरमान प्रमुख था। इस फरमान का अंग्रेज व्यापारी प्राय: दुरूपयोग करते थे, जिससे नवाब को आर्थिक क्षति होती थी।
- 1740-56 बंगाल का नवाब अलीवर्दी खां था जो योग्य प्रशासक था उसने अंग्रेजों को कलकत्ता में और फ्रांसीसियों को चन्द्रनगर में किलेबंदी नहीं करने दी। अलीवर्दी खां ने अंग्रेजों की तुलना मधुमक्खी के छत्ते से की।
- 1756 ई. में बंगाल की नवाबी सिराजुद्दौला को प्राप्त हुई किन्तु नवाब की गद्दी के अन्य दावेदार भी थे जिनमें शौकतजंग एवं घसीटी बेगम प्रमुख थी। इस तरह बंगाल में एक सिराजुद्दौला विरोधी गुट का आविर्भाव हुआ। अंग्रेजों ने इस स्थिति से लाभ उठाना चाहा। उन्होंने फ्रांस से युद्ध की संभावना का बहाना बनाकर सैनिक किलेबंदी आरंभ कर दी और नवाब विरोधी तत्वों को आश्रय प्रदान किया। जिसमें दीवान राजवल्लभ एवं उसका पुत्र कृष्णवल्लभ प्रमुख थे। व्यापारी अमीचंद भी लेन देन में नवाब को अत्यधिक हानि पहुंचाकर अंग्रेजों के पास चला गया था, इस प्रकार अंग्रेजों की गतिविधियों ने सिराजुद्दौला को नाराज कर दिया। अत: सिराजुद्दौला के लिए अपने विरोधी तत्वों को कुचलना आवश्यक था।
- सिराज ने 1756 में घसीटी बेगम, शौकतजंग को पराजित किया और कलकत्ते के किले को घेर लिया। इसी समय 20 जनवरी 1756 को ब्लैकहोल दुर्घटना घटी थी। सिराज की उस सफलता से अंग्रेज बौखला गए और उनके आर्थिक हितों पर चोट पहुंची। अत: क्लाइव के नेतृत्व में जनवरी 1757 में पुन: कलकत्ते पर अधिकार कर लिया। सिराजुद्दौला को पराजित कर उसके साथ 9 फरवरी 1757 को अलीनगर की संधि की।
- अलीनगर की संधि से अंग्रेजों को बंगाल, बिहार, उड़ीसा

में बिना चुंगी दिए व्यापार करने की अनुमति मिली। सिक्के ढालने और कलकत्ता की किलेबंदी रखने का अधिकार अंग्रेजों को प्राप्त हुआ। इस प्रकार बंगाल में ब्रिटिश इस्ट इंडिया कपनी की सामांतर सत्ता स्थापित हो गई। यह संधि सिराजुद्दौला के लिए अपमानजनक थी। इसी बिंदु पर यह सवाल उठता है कि सिराजुद्दौला जैसे शासक ने इस अपमानजनक संधि को क्यों स्वीकार किया। वस्तुतः सिराज को उसके कर्मचारियों ने धोखा दिया और अंग्रेजों के विरूद्ध समय पर सैनिक सहायता नहीं भेजी। इस तरह सिराज को अपने कर्मचारियों की वफादारी पर संदेह हो गया। दूसरी ओर अहमदशाह अब्दाली दिल्ली तक आ चुका था, सिराज को उसके आक्रमण का भय था इसलिए उसने अंग्रेजों से संधि करना उचित समझा।

- अब ब्रिटिश ने बंगाल में अपना नियंत्रण बढ़ाने के लिए प्रमुख प्रतिद्वन्दी शक्ति फ्रांसीसियों के विरूद्ध कार्यवाही की और चंद्रनगर पर कब्जा कर फ्रांसीसियों की शक्ति को नष्ट कर दिया और अब बंगाल में अपनी सत्ता को जमाने के लिए उन्हे एक कठपुतली नवाब की आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति प्लासी के युद्ध से पूरी हुई।

प्लासी का युद्ध

प्रश्न : प्लासी के युद्ध के कारणों एवं महत्व की विवेचना कीजिए।

कारण :

- अंग्रेजों द्वारा नवाब पर अलीनगर की संधि के उल्लंघन का आरोप।
- अंग्रेजों का शत्रुतापूर्ण व्यवहार एवं नवाब के विरोधियों को अपने यहां शरण देना।
- अंग्रेजों द्वारा व्यापारिक सुविधाओं का दुरूपयोग एवं व्यापारिक कोठियों की किलेबंदी करना।
- अंग्रेज बंगाल पर अपना राजनीतिक प्रभाव स्थापित करना चाहते थे इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु नवाब सिराजुद्दौला को पदच्युत कर अपना मनपसंद मोहरा बंगाल की गद्दी पर बैठाना।
- **गतिविधियां :** अंग्रेजों ने सिराज के विरूद्ध मीरज़ाफर से गुप्त समझौता किया और षडयंत्र कर नवाब के सेनापति रायदुर्लभ, जगतसेठ, अमीचंद व्यापारी को अपनी ओर मिला लिया। प्लासी के मैदान में वास्तव में युद्ध हुआ ही नहीं क्योंकि नवाब के सैन्य अधिकारियों ने उसके साथ विश्वासघात किया और मैदान में मूकदर्शक की तरह खड़े रहे। स्वाभाविक रूप से यहां अंग्रेजों की विजय हुई।

प्लासी के युद्ध में नवाब की हार के कारण :

- **नवाब का व्यक्तित्व :** उसकी हार का प्रमुख कारण था। मीरजाफर के षड्यंत्र को जानते हुए भी नवाब ने उसे तथा उसके अन्य विश्वासघाती साथियों को गिरफ्तार नहीं किया। युद्ध के मैदान मे भी वह घबराकर भाग गया। उसने अपनी सेना को धैर्य बंधाया होता तो उसे सफलता प्राप्त हो सकती थी। वह एक कुशल सेनापति नहीं था।
- मीरजाफर व अन्य अधिकारियों ने उसके साथ विश्वासघात किया।
- युद्ध में मीरमदान की मृत्यु ने नवाब के हौसले पस्त कर दिये।
- नवाब को सेना शीघ्रता के साथ आगे नहीं बढ़ सकती थी।
- नवाब की तोपें बहुत भारी थीं। अतएव उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में कठिनाई होती थी। भारतीय बन्दूकों की मार अच्छी नहीं थी। इसके विपरीत अंग्रेजों की तोपें हल्की थीं और बन्दूकें दूर तक मार कर सकती थी। नवाब की तोपें व बन्दूकें व गोला बारुद वर्षा के कारण भीग जाने से प्रभावहीन हो गया थे।
- नवाब ने हाथियों का प्रयोग करके गलती की।
- नवाब के घुड़सवार अंग्रजों द्वारा प्रशिक्षित पैदल सैनिकों के सामने निकम्मे सिद्ध हुए।
- मेजर किलपैट्रिक के अनुसार युद्ध आरम्भ होते समय नवाब के अधीन फ्रांसीसी तोपची ऊँचे मैदान से गोलाबारी करके अंगेजों पर दबाव डाल सकते थे किन्तु कुछ समय बाद उन्होंने यह स्थान छोड़ दिया। संभवतः बंगाली अधिकारियों के विश्वासघात के कारण उन्हें नवाब की सफलता में सन्देह होने लगा था।
- क्लाइव के छल-कपट व नीति निपुणता का प्रदर्शन किया। अदूरदर्शी सिराजुद्दौला क्लाइव की कुटिल नीति और षड्यंत्र के सामने टिक नहीं सकता था।
- भारतीयों की हार का एक महत्त्वपूर्ण कारण उनकी नैतिक दुर्बलता थी। उस समय में भारतीय राजनीति में स्वार्थ

षड्यंत्र तथा विश्वासघात का बोलबाला था। अतएव वे एक ऐसी कौम के सामने नहीं ठहर सकते थे जिसमें देशभक्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी।

प्लासी के युद्ध का महत्व एवं परिणाम : प्लासी के परिणामों को लेकर इतिहासकारों ने कई स्थापनाएं की है :

- मैलेसन की के अनुसार "प्लासी का युद्ध भारत के निर्णायक युद्धों में से एक था।"
- ताराचंद के शब्दों में "प्लासी के युद्ध से परिणामों की लंबी श्रृंखला शुरू हुई जिसने भारत का रूख बदल दिया।"
- के.एम. पनिक्कर के अनुसार "प्लासी एक सौदा था जिसमें बंगाल के कुछ धनी स्वार्थी लोगों ने अपना देश अंग्रेजों को बेंच दिया।"

राजनैतिक महत्व :

- मीरजाफर को नवाब बनाने से बंगाल में संरक्षित राज्य स्थापित हुआ, उसी से भारत में ब्रिटिश राज्य का निर्माण संभव हो सका।
- बंगाल में अंग्रेजों की सर्वोच्चता स्थापित हो गई। अंग्रेज, राजा निर्माता (King maker) के रूप में जाने गए।
- प्लासी की विजय ने EIC के स्वरूप में परिवर्तन ला दिया। अब वह केवल व्यापारिक कंपनी न रहकर राजनीतिक सत्ता हो गई।
- अंग्रेजों को भारतीय राजनीति की दुर्बलताओं के विषय में सही ज्ञान हो गया। वे जान गए कि स्वार्थी असंतुष्ट अधिकारियों एवं व्यापारियों के साथ षडयंत्र कर अपने साम्राज्य का विस्तार कर सकते हैं।

  अंग्रेजों के लिए साम्राज्य विस्तार का मार्ग खुल गया। बंगाल एक उपजाऊ एवं समृद्धशाली प्रदेश था। दिल्ली से दूर होने के कारण बंगाल अन्य शक्तियों के प्रहार से दूर रह सकता था।
- इस युद्ध ने मुगल साम्राज्य की दुर्बलता को प्रकट कर दिया। मुगल सम्राट अपने अधीन एक सूबेदार को एक विदेशी व्यापारिक संस्था द्वारा हटाए जाने के विरूद्ध कोई कार्यवाही नहीं कर सका।
- बंगाल से डचों और फ्रांसीसियों की शक्ति को अंग्रेजों ने नष्ट कर दिया जो भारत में उनके लिए चुनौती बन सकती थी।

सैनिक महत्व :

- प्लासी में अंग्रेजों की एक छोटी प्रशिक्षित सेना ने एक बड़ी भारतीय सेना के रहते विजय प्राप्त की। इससे यह सिद्ध हो गया कि भारतीय सेना एक भीड़ है जिसे आसानी के साथ तितर-बितर किया जा सकता है।
- मीरजाफर ने अंग्रेजों को बारूद की खानों पर एकाधिकार प्रदान किया। इससे अंग्रेजों का तोपखाना और शक्तिशाली हुआ।

आर्थिक महत्व :

- प्लासी युद्ध के पश्चात् बंगाल की वह लूट आरंभ हुई जिसने भारत के सबसे धनी प्रदेश को निर्धन बना दिया। इस लूट में सिर्फ अंग्रेज ही शामिल हुए।
- मीरजाफर ने 3 करोड़ रूपए कंपनी के अधिकारियों को दिए एवं अगले आठ वर्षों में कंपनी ने 15 करोड़ से अधिक का लाभ कमाया। कंपनी को बंगाल, बिहार, उड़ीसा में मुफ्त व्यापार का निर्विरोध अधिकार प्राप्त हुआ एवं कलकत्ता के समीप 24 परगना की जमींदारी भी प्राप्त हुई।
- बंगाल के संसाधनों का प्रयोग करके अंग्रेजों ने अपने प्रतिद्वन्दियों की शक्ति को नष्ट किया।
- आर्थिक दृष्टि से प्लासी युद्ध के पश्चात् एक नवीन युग का प्रारम्भ हुआ जिसमें राज्य विस्तार व्यापार के साथ जुड़ गया एवं भारत की दासता का वह युग आरंभ हुआ जिसमें भारत का आर्थिक व नैतिक शोषण अत्यधिक हुआ। 1757 से पहले बंगाल का 74% व्यापार ब्रिटेन से आयातित सोने-चांदी से होता था, प्लासी के पश्चात् सोना-चांदी का निर्यात अब चीन को होने लगा फलतः बंगाल को आर्थिक क्षति हुई।

नैतिक महत्व :

- षडयंत्र द्वारा प्राप्त सफलता से उत्साहित अंग्रेजों ने अपने कुचक्रों में वृद्धि की।
- भारतीयों की विश्वासघाती प्रवृति का लाभ उठाकर अंग्रेजों ने अपने प्रभाव का विस्तार किया।
- अंग्रेजों ने 'फूट डालो-राज करो' नीति की सफलता को देखकर भविष्य में इसे अपनाया।

निष्कर्ष :

- प्लासी की विजय ने बंगाल में अंग्रेजों का प्राधान्य स्थापित कर दिया किन्तु प्लासी में इस बात का निर्णय नहीं हुआ

कि बंगाल में वास्तविक शासक कौन है? नवाब और अंग्रेजों में इसके लिए एक संघर्ष होना स्वाभाविक था। अत: बक्सर के युद्ध के बीज प्लासी में बोए गए।

- चूंकि इसमें विजय विश्वासघात के माध्यम से प्राप्त की गई थी अत: सैनिक दृष्टिकोण से इसका महत्व कम रहा।
- अब बंगाल से धन की निकासी शुरू हुई। 1757 से पूर्व अंग्रेज कंपनी भारत से सामान खरीदने के बदले सोना व चांदी का आयात करती थी। 1757 के पश्चात् वह बंगाल के उपलब्ध धन से सामान ले जाने लगी। इस प्रकार बंगाल की लूट आरंभ हुई।

प्रश्न : बक्सर के युद्ध के कारणों एवं महत्व का उल्लेख कीजिए।

बक्सर के युद्ध की पृष्ठभूमि :

- प्लासी के पश्चात् मीरजाफर बंगाल का नवाब बनाया गया जिसने 57-60 तक बंगाल में शासन किया। इसके समय राजकोष रिक्त हो गया, प्रशासनिक अव्यवस्था फैल गई। चूंकि मुगल शाहजादे अलीगौहर का बंगाल पर आक्रमण का अंदेशा था अत: मीरजाफर अंग्रेजों पर पूरी तरह निर्भर था।
- कंपनी के किस्तों का भुगतान न कर पाने की स्थिति से नवाब को बर्दवान, नादिया, हुगली के क्षेत्रों का राजस्व कंपनी को सौंपना पड़ा। किन्तु इससे अंग्रेजों की आवश्यकताएं पूरी नहीं हो पा रही थी। अत: अंग्रेज मीरजाफर के स्थान पर किसी अन्य कठपुतली को बैठाना चाह रहे थे। यह मौका उन्हे 1760 में मिला जब उसके पुत्र मीरन की मृत्यु के पश्चात् उत्तराधिकार का षडयंत्र होने लगा।
- अंग्रेजों ने मीरजाफर को गद्दी छोड़ने के लिए बाध्य किया और उसके दामाद मीरकासिम को बंगाल का नवाब बनाया। इसे 1760 ई. की 'रक्तहीन क्रांति' का नाम दिया गया। किन्तु इसे क्रांति कहना उचित नहीं है क्योंकि सर्वप्रथम तो इसमें बंगाल की जनता की कोई भूमिका नहीं थी। दूसरी बात, राजनीतिक क्षेत्र में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ। एक कठपुतली के बदले दूसरे कठपुतली नवाब की नियुक्ति की गई और बंगाल की वास्तविक शक्ति तो उसी के पास रही जिसके पास पहले थी और वह शक्ति थी अंग्रेज।
- मीरकासिम ने कंपनी को बर्दवान, मिदनापुर, चटगांव के क्षेत्र दिए साथ ही एक बड़ी धनराशि दी। इस तरह उसने अपने उत्तरदायित्व की पूर्ति मान ली। वस्तुत: मीरकासिम एक कुशल और महात्वाकांक्षी सेनानायक था। उसने बंगाल के आर्थिक और प्रशासनिक सुदृढ़ीकरण का प्रयास किया। सेना को प्रशिक्षित करने के लिए फ्रांसीसियों की नियुक्ति की। अंग्रेजी प्रभाव से मुक्त होने के लिए राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानांतरित की। अंग्रेजी संरक्षण प्राप्त अनुशासनहीन जमींदार रामनारायण के विरूद्ध भी कासिम ने दमनात्मक कारवाई की। फलत: अंग्रेजों और मीरकासिम के संबंध कटु होते चले गए।
- अंग्रेज व्यापारी अपने दस्तक (Pass) का दुरूपयोग करते थे इससे नवाब के राजस्व को भारी नुकसान हो रहा था। अत: मीरकासिम ने समस्त आंतरिक व्यापार को करों से मुक्त कर दिया। इस कदम से अंग्रेज अत्यधिक क्रोधित हुए क्योंकि यह उनके विशिष्ट अधिकारों पर कुठाराघात था। अत: मीरकासिम एवं अंग्रेजों के मध्य 1763 में संघर्ष छिड़ गया। नवाब भाग कर अवध पहुंचा जहां नवाब शुजाउद्दौला एवं मुगल सम्राट शाह आलम II के साथ कंपनी के विरूद्ध गठबंधन किया। यही बक्सर के युद्ध की पृष्ठभूमि थी।

कारण :

- नवाब मीरकासिम वास्तविक नवाब बनना चाहता था, जो अंग्रेजों को मंजूर नहीं था।
- अंग्रेजों की बढ़ती मांगे नवाब द्वारा पूरी नहीं की गई।
- अंग्रेजों द्वारा दस्तक का दुरूपयोग और नवाब द्वारा आंतरिक कर की समाप्ति।

महत्व :

- जहां प्लासी की विजय क्लाइव के षडयंत्रों का परिणाम थी वहीं बक्सर की विजय अंग्रेजी सैनिक शक्ति की स्पष्ट विजय थी।
- बक्सर का युद्ध निर्णायक साबित हुआ। प्लासी ने बंगाल में अंग्रेजों का प्रभाव स्थापित किया था किन्तु इसका निर्णय नहीं हो सका कि बंगाल का वास्तविक शासक कौन है? बक्सर ने इसका निर्णय कर दिया। बक्सर ने अंतिम रूप से बंगाल में अंग्रेजी राज्य की कड़ियों में रिबट (कीलें) लगा दी।

- तत्कालीन भारत की महत्वपूर्ण शक्तियां ब्रिटिश के अधीन हो गई। मुगल बादशाह शाहआलम अंग्रेजों पर निर्भर हो गया। अवध व बंगाल कंपनी के नियंत्रण में आ गए। इस तरह कंपनी के लिए भारत के विजय द्वार खुल गए।
- प्लासी ने बंगाल के नवाब के अधिकारों को समाप्त नहीं किया था बक्सर ने उनके अधिकारों को पूर्णतः समाप्त कर दिया।
- प्लासी ने अंग्रेजों को वैध शासक नहीं बनाया था किन्तु बक्सर ने उन्हे वैध शासक बना दिया। क्योंकि उसके बाद 'इलाहाबाद की संधि' से बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी उन्हे मुगल सम्राट की तरफ से प्राप्त हुई।
- प्लासी के बाद जिस लूट का आरंभ हुआ बक्सर ने इस लूट के वेग को तेज कर दिया और उसे वैधानिक रूप प्रदान किया। इस तरह बक्सर युद्ध ने प्लासी द्वारा प्रारंभ की गई प्रक्रिया को पूरा किया। बक्सर ने अंग्रेजों की सर्वोच्चता को असंदिग्ध रूप से सिद्ध कर दिया।
- बंगाल पर नियंत्रण के पश्चात् कंपनी ने द्वैध शासन प्रणाली की स्थापना की। भू-राजस्व व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, पुलिस व्यवस्था की स्थापना की। आगे बंगाल के गवर्नर के रूप में हेस्टिंग्स की नियुक्ति की गंई जिसे आगे चलकर भारत के गवर्नर के रूप में जाना जाने लगा। यह इस बात का प्रमाण है कि बंगाल पर अंग्रेजी नियंत्रण भारत पर ब्रिटिश नियंत्रण की प्रस्तावना थी।